मंगलम्

स जयति सिन्दूरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम्।
वासरमणिरिव तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम्।।1।।

उन गजवदन देव की जय हो, जिनके चरणकमल का स्मरण सम्पूर्ण विघ्नसमूह को इस प्रकार नष्ट कर देता है जैसे सूर्य अन्धकार के राशि को।।१।।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।2।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।3।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।4।।

जो पुरुष विद्यारम्भ, विवाह, गृहप्रवेश, निर्गमन (घर से बाहर जाने), संग्राम अथवा संकट के समय सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्न-नाशन, विनायक, धुम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र और गजानन-इन बारह नामों का पाठ या श्रवण भी करता है, उसे किसी प्रकार का विघ्न नहीं होता।।२-४।।

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये।।५।।

जो श्वेत वस्त्र धारण किये हैं, चन्द्रमा के समान जिनका वर्ण है तथा जो प्रसन्न वदन हैं, उन देव देव चतुर्भुज भगवान् गणेश जी का सब विघ्नों की निवृत्ति के लिये ध्यान करना चाहिये।।५।।

बीज मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।
ॐ श्रीं ॐ
माँगूं मैं झोली पसार दीजे माई अन्नपूर्णा।
ॐ श्रीं ॐ
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

卐 श्रीगणेशाय नमः 卐

प्रातः स्मरणम्

प्रथम ब्रह्म-मुहूर्त में उठने का अभ्यास करें। बड़ा सुनहला समय है क्योंकि जब तक सूर्योदय नहीं होता है, तब तक माया सोती रहती है। इसी समय संगीतज्ञ संगीत का, विद्यार्थी विद्या का अभ्यास करते हैं तथा योगी, महात्मा-आसन, प्राणायाम आदि करते हैं। इसी समय हम उठने का अभ्यास करें। सूर्योदय हो जाने पर माया जग जाएगी और वह भजन नहीं करने देगी। **उठने के बाद सबसे पहले अपने हाथों के दर्शन करने चाहिए और यह मन्त्र बोलना चाहिए-**

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्
अथवा- **करमूले तु गोविन्द प्रभाते करदर्शनम्।।**

बाद में बिस्तर पर बैठे-बैठे सर्व देवों की स्तुति करना-

गणेश स्तुति-

गजाननं भूतगणादिसेवितम्, कपित्थ-जम्बू-फल-चारु-भक्षणम् ।
उमासुतं शोक-विनाश-कारकम्, नमामि विघ्नेश्वर-पाद-पंकजम् ।।

श्लोक-

वर्णानामर्थसंघानाम् रसानाम् छन्दसामपि ।
मंगलानाम् च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ।।

गजाननं स्तुति-

गाइये गणपति जगबन्दन, शंकर सुवन भवानी नन्दन ।
सिद्धि सदन गजबदन विनायक, कृपासिन्धु सुन्दर सब लायक ।।
मोदक प्रिय मुद मंगलदाता, विद्या वारिधि बुद्धि विधाता ।
माँगत तुलसीदास कर जोरे, बसहिं राम सिय मानस मोरे ।।

शंकर स्तुति-

सानन्दमानन्दवने वसन्तमानन्दकन्दं हतपापवृन्दम्।
वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये।।

प्रभु स्तुति-

मूकं करोति वाचालं पंगु लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वंदे परमानन्द-माधवम्।।

देवी स्तुति-

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।।

सूर्य स्तुति-

जपा-कुसुम-संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

पंच कन्या स्तुति-

अहिल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा।
पञ्चकन्यां स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्।।

सप्तदेव स्तुति-

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविनः।।

गुरु स्तुति-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
अखंडमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

शैय्यासे उठ कर पृथ्वी पर पैर रखने से पहले बोलने का मन्त्र-

समुद्रवसने देवि! पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

श्रीलक्ष्मी स्तुति-

जिनकी कान्ति सुवर्ण-वर्णके समान प्रभायुक्त है और जिनका हिमालय के समान अत्यन्त ऊँचे उज्जवल वर्णके चार गजराज अपनी सूँड़ों से अमृत कलश के द्वारा अभिषेक कर रहे हैं, जो अपने चार हाथों में क्रमशः वरमुद्रा, अभयमुद्रा और कमल तथा चक्र धारण किये हुई हैं, मस्तक पर उज्जवल वर्ण का भव्य किरीट सुशोभित हो रहा है, कटि-प्रदेश में कौशेय (रेशमी) वस्त्र सुशोभित हो रहे हैं, ऐसी कमलपर स्थित भगवती लक्ष्मी जी की मैं वन्दना करता हूँ।

सरस्वती स्तुति-

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वंदिता,
सा माम् पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।

अर्थात् जो कुन्द के फूल, चन्द्रमा, बर्फ और हार के समान श्वेत हैं, जो शुभ्र वस्त्र पहनती हैं, जिनके दो हाथों में वीणा और शेष दो हाथ वर और दण्ड मुद्रा से सुशोभित हैं, जो श्वेत कमलासन पर बैठती हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देव जिनकी सदा स्तुति करते हैं और जो सब प्रकार की जड़ता हर लेती हैं, वे **भगवती सरस्वती** मेरा पालन करें।

इसके पश्चात् माता-पिता एवं गुरूजनों को अभिवादन करें। फिर स्नान के पश्चात् ध्यान सन्ध्या वन्दनादि करें

प्रार्थना

भगवान् से सच्चे मनसे प्रार्थना कीजिये– 'मेरे नाथ! यदि आप मुझे इसी गिरी अवस्था में देखना पसन्द करते हैं, इस प्रकार से निरन्तर मेरे मन में अशान्ति बनी रहने देने में ही आपका चित्त प्रसन्न होता है– बार–बार मेरे सामने आप आते हैं और आपका मैं तिरस्कार कर देता हूँ, यदि इसी घृणित अवस्था में मुझे रखकर आप प्रसन्नता का अनुभव करते हैं तो फिर अपनी इच्छा पूर्ण करते हो, हे नाथ! क्योंकि आप यदि ऐसा चाहते हैं तो इसीमें मेरा परम मङ्गल है परन्तु यदि ये सब दोष मेरी कमी के कारण होते हों–मेरी तत्परता की कमीके कारण, मेरे अविश्वास के कारण होते हों तो प्रभो! अब बहुत हो चुका। नाथ! अब कृपा करके इसी क्षण इन्हें मिटा दो। मैं अबोध हूँ, अज्ञानी हूँ, पतित हूँ, मुझे पता नहीं कि मेरे मन में ये दोष किस कारण से आते हैं। इनके मिटाने का उपाय तो सुनता हूँ, परन्तु उसका आचरण भी मुझसे नहीं होता है। क्यों नहीं होता, इसका कारण भी मैं नहीं जानता। अतएव हे दया के सागर! अब मेरी ओर निहारो और फिर जो उचित हो, करो। शान्ति यदि मेरी कमी के कारण मुझे नहीं मिल रही है तो फिर मेरी कमीको मिटा दो, इसी क्षण मिटा दो और यदि तुम्हारी इच्छा से शान्ति मिल नहीं रही हो, तब तो मुझे कुछ कहना है ही नहीं, यह शान्ति ही मेरा परम प्रिय धन है– मैं ऐसा अनुभव करने लगूँ, क्योंकि तुम मेरे स्वामी हो, तुम्हारा मुझपर पूर्ण अधिकार है। मैं तुम्हारी वस्तु हूँ, तुम जैसे रखना चाहो, वैसे ही रखो।

प्रार्थना

हे प्रभो! ब्रह्मा के रूप में तुम ही सबको जन्म देते हो। हे जगदीश्वर! विष्णु के रूप में तुम ही सबका पालन करते हो। हे भगवन् महेश्वर के रूपमें तुम ही सबका लय करते हो। (सिर झुकाकर) मैं तुम्हारी सत्ता को तुम्हारी शक्ति को, तुम्हारी सर्वज्ञता को और तुम्हारी सर्वव्यापकता को स्वीकार करता हूँ/करती हूँ।

हे प्रभो ! तुमने मुझे यह चेतन, प्रकाशमान, विकार-रहित, निरोग, स्वस्थ, सक्रिय, अद्‌भुत और सुन्दर मानव-शरीर प्रदान किया है। (सिर झुकाकर) मैं तुम्हारा कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूँ/करती हूँ।

हे प्रभो ! तुमने मुझे वायु दी, जल दिया, भोजन दिया, वस्त्र दिये, निवास दिया। (सिर झुकाकर) मैं तुम्हारा कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूँ/करती हूँ।

सोचने-विचारनेके के लिए हे प्रभो ! तुमने मुझे मस्तिष्क दिया है। देखने के लिये हे जगदीश्वर ! तुमने मुझे दो आँखें दी हैं। सुनने के लिये हे भगवन् ! तुमने मुझे दो कान दिए हैं। श्वॉस-प्रश्वॉस के लिए हे अन्तर्यामी ! तुमने मुझे नासिका दी है। भोजन करने और जल पीने के लिए हे ईश्वर ! तुमने मुझे मुख दिया है। बोलने और स्वाद चखने के लिए हे परमेश्वर ! तुमने मुझे जिह्वा और ओष्ठ दिये हैं। भक्ति और प्यार करने के लिये हे स्वामी ! तुमने मुझे हृदय दिया है। कर्म करने के लिए हे परमात्मन् तुमने मुझे दो हाथ दिये हैं। मूत्र त्यागने के लिए है रचनाकार ! तुमने मुझे मूत्रेन्द्रिय दी है। मल त्यागने के लिये हे सर्वात्मा ! तुमने मुझे गुदा प्रदान की है। चलने-फिरने के लिये है। जगत्पति ! तुमने मुझे दो टाँगे दी हैं।

हे प्रभो ! तुमने मुझे इतनी अमूल्य वस्तुओं से भरपूर कृतार्थ किया है। (सिर झुकाकर) मैं तुम्हारा कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूँ/करती हूँ। मैं तुम्हारा गुणगान करता हूँ/करती हूँ। मैं तुम्हारे श्रीचरणों में नतमस्तक होता हूँ/होती हूँ। हे प्रभो ! सबका कल्याण करों, मंगल करो। हे जगदीश्वर ! मेरा भी कल्याण करो, मंगल करो हे अन्तर्यामि ! नीरोगता, स्वस्थता, सक्रियता, प्रसन्नता तथा सम्पन्नता बनाए रखो।

ओ३म् शान्तिः ! शान्ति !! शान्तिः !!!

अथर्ववेदीय शान्ति पाठ

हे गणपति भगवान् श्री गणेश! हम कानों से सदैव ऐसी वाणी सुनें जो हमें सुख दे तथा आँखों से हम सदा ऐसी रूपों को देखें जो हमें सुख दें और बुराईयों से हमेशा दूर रखें। हमारा जीवन भलाई के कामों में व्यतीत हो। हम सदा भगवान् की पूजा में लगे रहें। बुरी बातों की ओर लेजाने वाली बातों से सर्वदा दूर रहें। हमारा स्वास्थ्य सदा ठीक रहे जिससे हम परमात्मा के चरणों में अपना जीवन समर्पित कर सकें। हमारा मन भोग-विलास में लीन न हो। हमारे प्रत्येक अंग में भगवान् विराजमान हों और हम उनकी सेवा-सुश्रुषा में लगे रहें जिससे हम हमेशा अच्छे कार्य करते रहें। ऐसी प्रार्थना हमें भगवान् से करनी चाहिए।।1।। जिनकी कीर्ति चारों तरफ फैली हुई है, वह देवों के राजा इन्द्र हमेशा हमारा कल्याण करें पूषा देवता हमारा कल्याण करें, संपूर्ण आपत्तियों के नाश करने वाले सुदर्शन चक्र के समान घातक गुरुड़ भगवान् हमारा कल्याण करें और बुद्धि के स्वामी एवं देवताओं के गुरु भगवान् श्री बृहस्पति हमारा कल्याण करें। ये उत्तम कामों की सहयोगी होते हैं। इनसे मनुष्यों का भला होता है।।2।।

अथ गणपति अथर्वशीर्ष:

श्री गणेश जी को नमस्कार है। आप ही साक्षात् तत्त्व हैं। आप ही कर्ता हो। आप ही केवल सब को धारण करने वाले हो, आप ही दूसरों का दु:ख हरने वाले हो और आप ही ब्रह्म रूप से ये सब रूप हैं। सब रूपों में आप ही दिखाई देते हो। आप सबमें व्याप्त हो। आप ही साक्षात् आत्मा का स्वरूप हो।।1।। मैं ऋत (शास्त्रीय सत्य) कहता हूँ मैं (लोकिक) सत्य भी कहा हूँ।।2।।

आप हमारी रक्षा करें। बोलने वाले की रक्षा करें। सुनने वाले की रक्ष करें। दान दाता की रक्षा करें। पालन करने वाले की रक्षा करें। आचार्य की रक्षा करें और शिष्यों की रक्षा करें तथा उनका भला करें। चारों दिशाओं से हमारी रक्षा करें।।3।।

शब्द और स्वर दोनों ही आप हैं। आप ही भला करने वाले चिन्मय तथा आनन्दमय हैं। आप ईश्वर हैं। आप सत् चित् आनन्द स्वरूप अद्वितीय प्रत्यक्ष ब्रह्म हैं। आप दया के सागर हैं। आप ही ज्ञान एवं विज्ञानमय हैं।।4।।

आप से ही यह सारा संसार उत्पन्न होता है। आप से ही यह स्थित होता है और आप में ही समा जाता है। पुनः यह जगत् आप से ही उत्पन्न होता है। आप ही पाँचों तत्व हो। चार प्रकार की वाङमयी सृष्टि में भी आप ही विराजमान हो।।5।।

आप लोभ, लालच, क्रोध से रहित हो अर्थात् गुणत्रय=सत्त्व, रजस् और तमस् से अतीत=परे हैं। जाग्रत, स्वप्न एवं निद्रा (यानि सुषुप्ती) की अवस्थाओं से आप मुक्त हो। आप काल से परे हो। आप मूलाधार चक्र में सदैव स्थित रहते हो। आप सर्वशक्तिमान् हो अर्थात् सृष्टि, स्थिति और प्रलय कारक शक्ति से युक्त हो। ऋषि, मुनि आदि सब आपको ही ध्याते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र सब आप ही हो। सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, वायु आप ही हो। आप ब्रह्म हो। तीनों लोक भू (पृथिवी), भुव। (अन्तरिक्ष) और स्वः (स्वर्ग) सहित ओंकार आप ही हो।।6।।

गण के शुरू अर्थात् 'ग्' को पहले बोलें। उसके बाद वर्णों के शुरू अर्थात् 'अ' को बोलें। उसके बाद अनुस्वार बोलें। इस प्रकार अर्धचन्द्र से युक्त 'गँ' को ओंकार से अवरुद्ध होने पर तुम्हारे बीज मन्त्र का स्वरूप (ओम् गँ) है। अतः गकार इसका पहला रूप है। अकार मध्य रूप है। अनुस्वार इसका अन्तिम रूप है तथा बिन्दु उत्तर रूप है। गूँज संधान है। संहिता (नाद)/संधि है। ऐसी यह गणेश विद्या है। इस महामन्त्र के ऋषि गणक है। निचृग्द्गायत्री छन्द है। गणपति देवता है। वह महामंत्र इसक प्रकार है-ॐ गं गणपतये नमः।।7।।

एक दन्त नाम से (भगवान् श्री गणेश) को हम जानते हैं। वक्रतुण्ड नाम से आप का हम ध्यान करते हैं। वही भगवान् गणेश जी (एक दन्ती) हमें ज्ञान प्राप्त करने योग्य प्रेरणा प्रदान करते हैं।।8।।

एक दाँत व चार भुजाओं वाले; पाश, अंकुश, एवम् आशीर्वाद की

मुद्रा, रद को हाथों में धारण किये हैं, मूषक चिन्ह की ध्वजा सहित, हाथी के समान आकार का लाल रंग के मुख वाले, सूप को आकार का समान आकार के कानों से युक्त तथा लाल रंग कण्डों से सुशोभित शरीर पर लाल रंग युक्त चन्दन लगाये, तरह-तरह के लाल रंग के फूलों से सजे हुए, सब से पूजित हो। भक्तों के ऊपर दया करते एवं सन्त जनों को तारने वाले आप जगत् के कारण होते हुए स्वरूप से च्युत (हटते) नहीं होते। सृष्टि के आदि में प्रकृति एवं पुरुष से परे भगवान् गणपति की जो नित्यप्रति आराधना करता है वह ऋषियों में सर्वश्रेष्ठ है।।9।।

व्रात (संस्कार विहीन) देवता आदि के भी स्वामी आप को नमस्कार करता हूँ। देवताओं में सर्वप्रथम पूज्य भगवान् श्री गणपति जी को नमस्कार। आदि स्वामी को नमस्कार। एकदन्त और लम्बोदर भगवान् श्री गणपति जी को नमस्कार। विघ्नों का विनाश करने वाले शिव पुत्र को नमस्कार। दु:खों को दूर करके वर प्रदान, करने वाले श्री गजानन को बारम्बार नमस्कार।।10।।

यह अथर्वशीर्ष है। जो इसको नित्य पढ़ता है, वह ईश्वर को प्राप्त करने का अधिकारी होता है। वह सब प्रकार दु:खों से छुटकारा तथा सुख-वैभव प्राप्त करने वाला है। यह पाँच प्रकार के महान् पापों से मुक्ति दिलाता है।।11।।

सायंकाल में पढ़ने से दिन के पापों का नाश होता है। सुबह पढ़ने से रात्रि के पापों का नाश होता है। दोनों समय पढ़ने से इसे निष्पापी होता है। सब जगह यानि सभि अवस्थाओं में पढ़ने से निर्विघ्न अर्थात् सकल कार्य विघ्न-बाधा रहित होते हैं। तथा धर्म, अर्थ, कामना एवं मोक्ष प्राप्त होता है।।12।।

यह अथर्वशीर्ष अशिष्य को नहीं देना चाहिये अर्थात् उसी को देना चाहिए जो इसके योग्य हो। यदि कोई इसे लालचवश या मोह बना देता है, वह पापी होता है। हजार बार अथर्वशीर्ष का पाठ करने पर जिन-जिन कार्यों को मन में धारण करे उन-उन कार्यों की सिद्धि इससे प्राप्त होता हैं।।13।।

अथर्वशीर्ष मन्त्र द्वारा जो गणपति को स्नान करता है उसकी सिद्ध वाणी

होती है। जो बिना भोजन किये चतुर्थी को इसका जाप करता है, वह विद्यवान् होता है। यह अथर्वशीर्ष मन्त्र है जो ब्रह्मादि देवताओं का भी आवरण ऐसे जानता है तथा वह कार्य भी किसी से भी भय-भीत नहीं होता।।14।।

जो घास के अंकुरों (दूर्वा) से गणेश जी की पूजा व हवन करता है वह कुबेर के समान धनवान् होता है। जो धान की खीलों से इसका पूजा व हवन करता है वह यशस्वी व बुद्धिमान् होता है। जो एक हजार लड्डुओं से पूजा व हवन करता है वह मनोकामना प्राप्त करता है। जो घी सहित समिधा से यज्ञ द्वारा पूजता है उसे सब कुछ प्राप्त होता है।।15।।

आठ ब्राह्मणों को इसे प्राप्त कराने से मनुष्य सूर्य के समान तेजस्वी होता है। सूर्य ग्रहण के समय, बड़ी नदियों के सामने, मूर्ति के सामने जो इस का जाप करता है, उसको इस की सिद्धि प्राप्त होती है। वह महाविघ्नों, महादोषों, महापापों से मुक्त होकर सर्वज्ञ हो जाता है, जो ऐसे जानकर इसका पाठ करता है। यह रहस्यमयी विद्या है।।16।।

!! इति गणपति अथर्वशीर्षः !!

दुर्गा देवी की स्तुति

हाथ जोड़ कर माँ से प्रार्थना करें

मन्दराचल पर निवास करने वाली सिद्धों की सेना की नेत्री आये। तुम्हें बारम्बार नमस्कार है कोटि-2 नमस्कार है। तुम्हीं कुमारी, काली, कपाली, कपिला, कृष्णा, पिंगला, भद्रकाली और महाकाली आदि अनेक नामों से प्रसिद्ध हो तुम्हें बारम्बार नमस्कार है, कोटि-2 नमस्कार है।

दुष्टों पर प्रचण्ड कोप करने के कारण तुम माँ चण्डी के नाम से प्रसिद्ध हो, भक्तों को संकट से तारणे के कारण तुम तारणी हो, तुम्हारे शरीर का दिव्य वरण बहुत सुन्दर है, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ। महाभागे! तुम्हीं सौम्य ओर सुन्दर रूप वाली कात्यायनी हो, तुम्हीं विकराल रूप धारण करने वाली माँ काली हो, मोर पंख की तुम्हारी ध्वजा है, नाना प्रकार के आभूषण तुम्हारी शोभा बढ़ाते हैं, त्रिशूल ओर खड़ग को तुम धारण करती हो, नन्द के वंश में तुमने अवतार लिया इसलिये गोपेश्वर कृष्ण की छोटी बहन हो।

गुण ओर प्रभाव में तुम सर्वश्रेष्ठ हो, महिषासुर का रक्त बहाकर तुम्हें प्रसन्ता हुई। कौशिक गोत्र में अवतार लेने के कारण तुम कौशिकी नाम से प्रसीद हो, तुम पीताम्बर धारण करती हो, जब तुम शत्रुओं को देख कर अट्टहास करती हो, उस समय तुम्हारा मुख सुदर्शन चक्र के समान उद्दीप्त हो उठता है।

युद्ध तुम्हें बहुत प्रिया है, हे माते! मैं तुम्हें बारम्बार प्रणाम करता हूँ। उमा, शकम्बरी, श्वेता, कृष्णा, कैटभ, हिरण्याक्षी, विरुपाक्षी, मधुराक्षी आदि अनेक नामों को धारण करने वाली देवी तुम्हें अनेकों बार नमस्कार है। तुम्हीं वेदों की स्तुति हो, तुम्हारा स्वरूप अत्यन्त सुन्दर है, वेद और ब्राह्मण तुम्हें अत्यन्त प्रिय हैं, तुम्हीं जात वेदा की अग्नि की शक्ति हो, जम्बु, कटक मन्दिरों में तुम्हारा निवास है, तुम समस्त विद्याओं में ब्रह्म विद्या हो, और देह धारियों की महानिद्रा हो, भगवती तुम कार्तिकेय की माता हो, दुर्गम स्थान में वास करने वाली दुर्गा हो, स्वहा, स्वधा, कला, काष्ठा, सरस्वती, वेद, सवित्र, वेदान्त ये तुम्हारे अनेक नाम हैं-

देवी मैंने हृदय से तुम्हारा स्तबन किया, तुम्हारी कृपा से मेरे जीवन में सदा ही जय हो।

माँ तुम्ही जंगल में, भक्तों के घर में निवास करती हो हम सब आप का सुगमता से दर्शन करते हैं।

आप हमारा मनोरथ सदैव पूर्ण करें।

जय माँ जय माँ जय जय माँ

माँ दुर्गा के १०८ नामों की माला

१. ॐ सती २. साध्वी ३.भवप्रीता (भगवान् शिव पर प्रीति रखने वाली) **४. भवानी ५. भवमोचनी** (संसार बन्धन से मुक्त करने वाली) **६. आर्या ७. दुर्गा ८. जया ९. आद्या १०. त्रिनेत्रा ११. शूलधारिणी १२. पिनाकधारिणी १३. चित्रा १४. चण्डघण्टा** (प्रचण्ड स्वर से घण्टानाद करने वाली) **१५. महातपाः** (भारी तपस्या करने वाली) **१६. मनः** (मनन-शक्ति) **१७. बुद्धिः** (बोधशक्ति) **१८. अहंकारा** (अहंता का आश्रय) **१९. चित्तरूपा २०. चिता २१. चितिः** (चेतना) **२२. सर्वमन्त्रमयी २३. सत्ता** (सत्-स्वरूपा) **२४. सत्यानन्दस्वरूपिणी २५. अनन्ता** (जिनके स्वरूप का कहीं अन्त नहीं) **२६. भाविनी** (सबको उत्पन्न करने वाली) **२७. भाव्या** (भावना एवं ध्यान करने योग्य) **२८. भव्या** (कल्याण रूपा) **२९. अभव्या** (जिससे बढ़कर भव्य कहीं है नहीं) **३०. सदागतिः ३१. शाम्भवी** (शिवप्रिया) **३२. देवमाता ३३. चिन्ता ३४. रत्नप्रिया ३५. सर्वविद्या ३६. दक्षकन्या ३७. दक्षयज्ञविनाशिनी ३८. अपर्णा** (तपस्या के समय पत्ते को भी न खाने वाली) **३९. अनेकवर्णा** (अनेक रंगों वाली) **४०. पाटला** (लाल रंगवाली) **४१. पाटलावती** (गुलाब के फूल या लाल फूल धारण करने वाली) **४२. पट्टाम्बरपरीधाना** (रेशमी वस्त्र पहनने वाली) **४३. कमलमञ्जीररञ्जिनी** (कमल के मञ्जीर को धारण करके प्रसन्न रहने वाली) **४४. अमेयविक्रमा** (असीम पराक्रम वाली) **४५. क्रूरा** (दैत्यों के प्रति कठोर) **४६. सुन्दरी ४७. सुरसुन्दरी ४८. वनदुर्गा ४९. मातङ्गी ५०. मतङ्ग मुनिपूजिता ५१. ब्राह्मी ५२. माहेश्वरी ५३. ऐन्द्री ५४. कौमारी ५५. वैष्णवी ५६. चामुण्डा ५७. वाराही ५८. लक्ष्मीः ५९. क्रिया ६०. विमला ६१. उत्कर्षिणी ६२. ज्ञाना ६३. क्रिया ६४. नित्या ६५. बुद्धिदा ६६. बहुला ६७. बहुलप्रेमा ६८. सर्ववाहनवाहना ६९. निशुम्भशुम्भहननी ७०.**

महिषासुरमर्दिनी ७१. मधुकैटभहन्त्री ७२. चण्डमुण्डविनाशिनी ७३. सर्वासुरविनाशा ७४. सर्वदानवघातिनी ७५. सर्वशास्त्रमयी ७६. सत्या ७७. सर्वास्त्रधारिणी ७८. अनेकशस्त्रहस्ता ७९. अनेकास्त्रधारिणी ८०. कुमारी ८१. एककन्या ८२. कैशोरी ८३. युवती ८४. यतिः ८५. अप्रौढा ८६. प्रौढा ८७. वृद्धमाता ८८. बलप्रदा ८९. महोदरी ९०. मुक्तकेशी ९१. घोररूपा ९२. महाबला ९३. अग्निज्वाला ९४. रौद्रमुखी ९५. कालरात्रिः ९६. तपस्विनी ९७. नारायणी ९८. भद्रकाली ९९. विष्णुमाया १००. जलादेरी १०१. शिवदूती १०२. कराली १०३. अनन्ता (विनाश रहिता) **१०४. परमेश्वरी १०५. कात्यायनी १०६. सावित्री १०७. प्रत्यक्षा १०८. ब्रह्मवादिनी**

दुर्गाजी के इस अष्टोत्तर शत नाम का जो प्रतिदिन पाठ करता है, उसके लिए तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नहीं है।

माँ दुर्गा के ३२ नाम

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी।।
दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला।।
दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता।।
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी।।
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी।।
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी।

१. दुर्गा
२. दुर्गार्तिशमनी
३. दुर्गापद्विनिवारिणी
४. दुर्गमच्छेदिनी
५. दुर्गसाधिनी
६. दुर्गनाशिनी
७. दुर्गतोद्धारिणी
८. दुर्गनिहन्त्री
९. दुर्गमापहा
१०. दुर्गमज्ञानदा
११. दुर्गदैत्यलोकदवानला
१२. दुर्गमा
१३. दुर्गमालोका
१४. दुर्गमात्मस्वरूपिणी
१५. दुर्गमार्गप्रदा
१६. दुर्गमविद्या
१७. दुर्गमाश्रिता
१८. दुर्गमज्ञानसंस्थाना
१९. दुर्गमध्यानभासिनी
२०. दुर्गमोहा
२१. दुर्गमगा
२२. दुर्गमार्थस्वरूपिणी
२३. दुर्गमासुरसंहन्त्री
२४. दुर्गमायुधधारिणी
२५. दुर्गमाङ्गी
२६. दुर्गमता

२७.दुर्गम्या	**३०.दुर्गभामा**
२८.दुर्गमेश्वरी	**३१.दुर्गभा**
२९.दुर्गभीमा	**३२.दुर्गदारिणी**

जब कोई मुनष्य शत्रुओं से पीड़ित हो अथवा दुर्भेद्य बन्धन में पड़ा हो, इन बत्तीस नामों के पाठ मात्र से संकट से छुटकारा पा जाता है। इसमें तनिक भी संदेह के लिये स्थान नहीं है। यदि राजा क्रोध में भरकर वध के लिये अथवा और किसी कठोर दण्ड के लिये आज्ञा दे दे, या युद्ध में शत्रुओं द्वारा मनुष्य घिर जाय अथवा वन में व्याघ्र आदि हिंसक जन्तुओं के चंगुल में फँस जाए, तो इन बत्तीस नामों का एक सौ आठ बार पाठ करने मात्र से वह सम्पूर्ण भयों से मुक्त हो जाता है।

जयकारा

झण्डे वाली माता तेरी सदा ही जय!
शेराँ वाली माता तेरी सदा ही जय!
जोताँ वाली माता तेरी सदा ही जय!
भवनाँ वाली माता तेरी सदा ही जय!

जय जय झण्डेवाली बोलो, जय जय शेराँ वाली।
दाती के दरबार से भक्तों, कोइ ना लौटा खाली।।

जयकारा बोलो जी, कभी ना डोलो जी।
बोलो जी, बोलो जी, जय जय जय जय।
सच्चे मन से एक बार जो, माँ जयकारा बोले।
जन्म-जन्म के बन्धन काटे, द्वार खुशियों के खोले।
माता पिता हर कोई बोले, मैं भी बोलूँ माता।
माता की कृपा से बंदा, भवसागर तर जाता।
बिगड़ी माँ तकदीर बनाये, सोये भाग जगाती।
जहाँ जहाँ जयकारे लगते, वहाँ वहाँ माँ आती।
धरती बोले अम्बर बोले, बोले ये जग सारा।
सारे देवी देवताओं से, माँ का नाम प्यारा।
घर घर में है माँ की महिमा, गली गली जगराते।
भक्त सभी हैं माँ के, मैया के गुण गाते।

अथ दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी। नमो नमो अम्बे दुःखहरनी।।
निरंकार है ज्योति तुम्हारी। तिहूँ लोक फैली उजियारी।।
शशि ललाट मुख महाविशाला। नेत्र लाल भृकुटी विकराला।।
रूप मातु को अधिक सुहावै। दरश करत जन अति सुख पावै।।
तुम संसार शक्तिलय कीना। पालन हेतु अन्न धन दीना।।
अन्नपूर्णा हुई जग पाला। तुम ही आदि सुन्दरी बाला।।
प्रलयकाल सब नाशन हारी। तुम गौरी शिव शंकर प्यारी।।
शिव योगी तुम्हरे गुण गावैं। ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावैं।।
रूप सरस्वती को तुम धारा। दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा।।
धर्‌यो रूप नरसिंह को अम्बा। परगट भई फाड़ कर खम्बा।।
रक्षा करि प्रहलाद बचायो। हिरणाकश को स्वर्ग पठायो।।
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं। श्री नारायण अंग समाहीं।।
क्षीरसिन्धु में करत विलासा। दयासिन्धु दीजै मन आसा।।
हिंगलाज में तुम्ही भवानी। महिमा अमितनजात बखानी।।
मातंगी धूमावती माता। भुवनेश्वरी बगला सुखदाता।।
श्री भैरव तारा जग तारिणि। छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी।।
केहरि वाहन सोह भवानी। लांगुर वीर चलत अगवानी।।
कर में खप्पर खड्ग विराजै। जाको देख काल डर भाजै।।
सोहै अस्त्र और त्रिशूला। जाते उठत शत्रुहिय शूला।।
नगरकोट में तुम्हीं बिराजत। तिहूँ लोक में डंका बाजत।।
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे। रक्तबीज शंखन संहारे।।
महिषासुरनृप अति अभिमानी। जेहि अघ भारमही अकुलानी।।
रूप कराल कालिका धारा। सेन सहित तुम तिहि संहारा।।

परी गाढ़ सन्तन पर जब जब। भई सहाय मातु तुम तब तब।।
अमर पुरी अरू बासव लोका। तब महिमा सब रहें अशोका।।
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी। तुम्हें सदा पूजें नर नारी।।
प्रेम भक्ति से जो यश गावै। दुःख दारिद्र निकट नहिं आवै।।
ध्यावै तुम्हें जो नर मन लाई। जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई।।
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी। योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी।।
शंकर अचरज तव कीनो। काम अरु क्रोध जीति सबलीनो।।
निशिदिन ध्यान धरोशंकरको। काहुकाल नहिंसुमिरो तुमको।।
शक्ति रूप को मरम न पायो। शक्ति गई तब मन पछितायो।।
शरणागत हुई कीर्ति बखानी। जय जय जय जगदम्ब भवानी।।
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा। दई शक्ति नहिं कीन बिलम्बा।।
मोको मातु कष्ट अति घेरो। तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो।।
आशा तृष्णा निपट सतावैं। मोह मदादिक सब बिनशावैं।।
शत्रु नाश कीजै महारानी। सुमिरों इकचित तुम्हें भवानी।।
करो कृपा हे मातु दयाला। ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला।।
जब लगि जिऊँ दया फल पाऊँ। तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊँ।।
दुर्गा चालीसा जो कोई गावै। सब सुख भोग परम पद पावै।।
भक्तों को शरण निज जानी। करहु कृपा जगदम्बे भवानी।।

।। इति श्री दुर्गा चालीसा।।

अथ विन्ध्येश्वरी चालीसा

नमो नमो विन्ध्येश्वरी, नमो नमो जगदम्ब।
संत जनों के काज में, करती नहीं विलम्ब।।

जय जय जय विन्ध्याचल रानी, आदि शक्ति जग विदितभवानी।
सिंहवाहिनी जय जय जगमाता, जय जय जय त्रिभुवन सुखदाता।
कष्ट निवारिणी जय जग देवी, जय जय संत असुर सुरसेवी।
महिमा अमित अपार तुम्हारी, शेष सहस मुख वर्णत हारी।
दीनन के दुःख हरत भवानी, नहिं देख्यो तुम सम कोउ दानी।
सब कर मनसा पुरवत माता, महिमा अमित जगत विख्याता।
जो जन ध्यान तुम्हारो लावे, सो तुरतहिं वांछित फल पावे।
तू ही वैष्णवी तू ही रुद्राणी, तू ही शारदा अरु ब्रह्माणी।
रमा राधिका श्यामा काली, तू ही मातु सन्तन प्रतिपाल।
उमा माधवी चण्डी ज्वाला, बेगि मोहि पर होहु दयाला।
तू ही हिंगलाज महारानी, तू ही शीतला अरु विज्ञानी।
तू ही लक्ष्मी जग सुखदाता, दुर्गा दुर्ग विनाशिनी माता।
तू ही जाहन्वी अरु उत्रानी, हेमावती अम्बे निर्वाणी।
अष्टभुजी वाराहिनी देवी, करत विष्णु शिव जाकर सेवी।
चौंसट्टी देवी कल्यानी, गौरी मंगल सब गुणखानी।
पाटन मुम्बा दन्त कुमारी, भद्रकाली सुन विनय हमारी।
बज्र धारिणी शोक नाशिनी, आयु रक्षिणी विन्ध्यवासिनी।
जया और विजया वैताली, मात संकटा अरु विक्राली।
नाम अनन्त तुम्हार भवानी, बरनै किमि मानुष अज्ञानी।
जापर कृपा मात तव होई, तो वह करै चहै मन जोई।
कृपा करहुँ मोपर महारानी, सिद्ध करिय अब यह मम बानी।
जो नर धरै मातु कर ध्याना, ताकर सदा होय कल्याना।

विपत्ति ताहि सपनेहु नहिं आवे, जो देवी का जाप करावै।
जो नर कहँ ऋण होय अपारा, सो नर पाठ करे शत बारा।
निश्चय नर ऋणमुक्त होई जाई, जो नर पाठ करे मन लाई।
अस्तुति जो नर पढ़ पढ़ावे, या जग में सो बहु सुख पावे।
जाको व्याधि सतावे भाई, जाप करत सब दूर पराई।
जो नर अति बन्दी महँ होई, बार हजार पाठ कर सोई।
निश्चय बन्दी ते छुटि जाई, सत्य बचन मम मानहुँ भाई।
जापर जो कछु संकट होई, निश्चय देविहिं सुमिरे सोई।
जाके पुत्र होय नहिं भाई, सो नर या विधि करे उपाई।
पाँच वर्ष सो पाठ करावे, नौरातन में विप्र जिमावे।
निश्चय होहि प्रसन्न भवानी, पुत्र देहिं ताको गुण खानी।
ध्वजा नारियल आन चढ़ावे, विधि समेत पूजन करवावै।
नित्य प्रति पाठ करे मन लाई, प्रेम सहित नहि आन उपाई।
यह श्री विन्ध्याचल चालीसा, रंक पढ़त होवे अवनीसा।
यह जानि अचरज मानहुँ भाई, कृपा दृष्टि जापर हुई जाई।
जय जय जय जग मातु भवानी, कृपा दृष्टि मोहि पर जानी।

।। इति श्री विन्ध्येश्वरी चालीसा समाप्त।।

ॐ नमः शिवाय !

❄ श्रीशंकर वन्दना ❄

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि।।

❄ श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् ❄

नागेन्द्रहराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय।।१।।
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय।।२।।
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय।।३।।
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य- मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय।।४।।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय।।५।।

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

❄ श्रीद्वादशज्योतिर्लिङ्गस्तोत्रम् ❄

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम् ।।
केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशङ्करम् ।
वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे ।।
वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुकावने ।
सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशं च शिवालये ।।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
सर्वपपविनिर्मुक्तः सर्वसिद्धिफलो भवेत् ।।

शिव स्तुतिः

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम्।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्।।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहम्।।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरम्।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा लसत्भालबालेन्दु कण्ठे भुजंगा।।
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं प्रसन्राननं नीलकण्ठं दयालुम्।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्।।
कलालीत कल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।
चिदानंद संदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं भजंतीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो।।

शिवस्तुतिरिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।

लिङ्गाष्टकम्

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गम् निर्मलभासितशोभितलिङ्गम्।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गम् तत्प्रणामामि सदाशिवलिङ्गम्।१।

देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गम् कामदहन करुणाकरलिङ्गं।
रावणादर्पविनाशनलिङ्गम् तत्प्रणामामि सदाशिवलिङ्गम्।२।

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गम् बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम्।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गम् तत्प्रणामामि सदाशिवलिङ्गम्।३।

कनकमहामणिभूषितलिङ्गम् फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम्।
दक्षसुयज्ञ विनाशनलिङ्गम् तत्प्रणामामि सदाशिवलिङ्गम् ।४।

कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गम् पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम्।
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गम् तत्प्रणामामि सदाशिवलिङ्गम्।५।

देवगणर्चितसेवितलिङ्गम् भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम्।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गम् तत्प्रणामामि सदाशिवलिङ्गम्।६।

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गम् सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम्।
अष्टदरिद्रविनाशकलिङ्गम् तत्प्रणामामि सदाशिवलिङ्गम्।७।

सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गम् सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम्।
परात्परं परमात्मकलिङ्गम् तत्प्रणामामि सदाशिवलिङ्गम्।८।

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।9।

शिव चालीसा

दोहा-

जय गणेश गिरजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास अब, देउ अभय बरदान।।

जय गिरिजा पति दीन दयाला। सदा करत सन्तन प्रति पाला।।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुण्डल नाग फनीके।।
अंग गौर सिर गंग बहाये। मुण्ड माल तन छार लगाये।।
वस्त्र-छाल बाघम्बर सोहे। छवि को देख नाग मुनि मोहे।।
मैना मातु की हवै दुलारी। बाम अंग सोहत छवि भारी।।
कर त्रिशूल सोहत छवि न्यारी। करत सदा शत्रुन क्षयकारी।।
नन्दी गणेश सोहत है कैसे। सागर मध्य कमल है जैसे।।
कार्तिक श्याम और गण राऊ। या छवि को कह जात न काऊ।।
देवन जबहिं जाय पुकारा। तबहीं दुःख प्रभु आप निवारा।।
किया उपद्रव तारक भारी। देवन सब मिलि तुमहिं पुकारी।।
तुरत षड़ानन आप पठायउ। लव निमेष महं मारि गिरायउ।।
आप जलंधर असुर संहारा। सुयश तुम्हारा विदित संसारा।।
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई। सबहिं कृपा करि लीन बचाई।।
किया तपहिं भागीरथ भारी। पुरेऊ प्रतिज्ञा तासु पुरारी।।
दानिन महं तुम सम कोउ नाही। अकथ अनादि भेद नहीं पाई।।
प्रगटी उदधि मंथन में ज्वला। जरे सुरासुर भये बेहाला।।
कीन्ह दया तब करी सहाई। नील कण्ठ तब नाम कहाई।।
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा। जीत के लंक विभीषण दीन्दहा।।
सहस कमल में हो रहे धारी। कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी।।
एक कमल प्रभु राखेउ जोई। कमल नयन पूजन चहं सोई।।

कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर। भये प्रसन्न दिये इच्छित वर।।
जय जय जय अनन्त अविनाशी। करत कृपा सब के घटवासी।।
दुष्ट सकल मोहि नित सतावै। भ्रमत रहे मोह चैन न आवे।।
त्राही-त्राही में नाथ पुकारु। ऐही अवसर मोहे आनी उबारो।।
ले त्रिशूल शत्रुन को मारो। संकट से मोहि आन उबारो।।
माता-पिता भ्राता सब कोई। संकट में पूछत नहीं कोई।।
स्वामी एक है आश तुम्हारी। आय हरहु मम संकट भारी।।
धन निरधन को देत सदाहीं। जो कोई जांचे वो फल पाहीं।
स्तुति केहि विधि करो तुम्हारी। क्षमहुं नाथ अब चूक हमारी।।
शंकर को संकट के नाशन। विघ्न निवारण मंगल कारण।।
योगी यती मुनि ध्यान लगावै। शारद नारद शीश नवावै।।
नमो नमो जय नमः शिवाय। सुर ब्रह्मादिक पार न पाये।।
जो यह पाठ करै मन लाई। ता पर रहत है शम्भु सहाई।।
ऋणीयां जो कोई हो अधिकारी। पाठ करै सो पावन हारी।।
पुत्र हिन इच्छा कर कोई। निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई।।
पण्डित त्रयोदशी को लावै। ध्यान पूर्वक होम करावै।।
त्रयोदशी व्रत करै हमेशा। ताके तन नहिं रहे कलेशा।।
धुप-दीप नैवध्य चढ़ावे। अंतवास शिवपुर में पावे।।
शंकर सम्मुख पाठ सुनावै। मन क्रम वचन ध्यान जो लावै।।
कहै''अयोध्या''आस तुम्हारी। नाथ सकल दुःख हरहु हमारी।।

दोहा

नित्य नेम करि प्राप्त ही, पाठ करौ चालीस।
तुम मेरी मन कामना, पूर्ण करो जगदीश।।
मंगसर छठ हेमन्त ऋतु, सम्बन्, चौसठ जान।
स्तुति चालीसा शिवहिं, पूर्ण कीन्ह कल्याण।।

श्रीनारायण कवच

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर पूछा- हे शुकदेव स्वामी ! विश्वरूप की थोड़ी कृपा करने से इन्द्र ने किस प्रकार दैत्यों को जीतकर अपना राज्य स्थिर रखा ? शुकदेवजी बोले-हे राजन्! विश्वरूप ने इन्द्रको ऐसा नारायणकवच सिखला दिया कि जिस कवचका मन्त्र पढ़कर अंगपर फूँक देने और वह कवच लिखकर भुजापर बाँधने से किसी शस्त्रका घाव नहीं लगता। जिस तरह शूरवीर अपने अंग की रक्षा के लिए कवच पहन लेते हैं, उसी तरह का कवच इसे समझना चाहिए। सो राजा इन्द्र वहीं मन्त्र अपने शरीर पर फूँककर लड़ने के लिए चढ़े थे। उसी के प्रताप से दैत्यों को जीता। यह सुनकर परीक्षित ने विनय किया- महाराज! जिस कवच में ऐसा गुण व प्रताप है, उसका विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए। शुकदेवजी बोले- हे राजा ! जिस समय किसी मनुष्य को कुछ भय प्राप्त हो, उस समय हाथ-पाँव धोकर आचमन करके उत्तर मुँह बैठे और आठ अक्षर के ''ॐ नमो नारायणाय'' के मंत्र से अगन्यास व करन्यास करके बारह अक्षर का ''ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'' का मन्त्र पढ़कर यों कहे-जलमें मत्स्यावतारसे रक्षा करो, पाताल में वामन अवतार से रक्षक हो, जहाँपर किला व जंगल हैं वहाँ नृसिंहजी रक्षा करें, मार्ग में यज्ञ भगवान रक्षा करें, विदेश में व पर्वत पर रामचन्द्रजी रक्ष हों, योग मार्ग में दत्तात्रेयजी रक्षा करें, देवता के अपराध से सनत्कुमार रक्षक हों, पूजा के विघ्न में नारदजी सहायक हों, कुपथ्य से धन्वन्तरि वैद्य रक्षा करें, अज्ञान से वेदव्यासजी और अधर्म से कल्की भगवान् सहायता करें। गोविन्द, नारायण, बलभद्र, मधुसूदन, हृषीकेश, पद्मनाभ, गोपीनाथ, दामोदर, ईश्वर, परमेश्वर जी भगवान् के 10 नाम हैं, वे आठों पहर सब अंगों व इन्द्रियों की रक्षा करें। वैकुण्ठनाथ का शंख, चक्र, गदा, पद्म और गरुड़जी अनेक भय से रक्षा करें। यही कवच विश्वरूप ने इन्द्र को बतलाकर कहा हे इन्द्र ! इस नारायण कवच को धारण करने वाले मनुष्य का सब भय छूट जाता है। यही कवच पढ़कर गरुड़जी वैकुण्ठनाथ को अपने ऊपर बैठाकर उड़ते हैं, जिसके प्रताप से कोई उनको जीत नहीं सकता। इस कवचका अभ्यास रखनेवाला कौशिक नामका

ब्राह्मण मरुदेश में मर गया था, उसकी हड्डियाँ वहाँ पड़ी थीं। एक दिन चित्ररथ गन्धर्वका विमान उड़ता हुआ चला जा रहा था जैसे ही विमान की छाया उन हड्डियों पर पड़ी, वैसे ही विमान उलट गया। जब बालखिल्य ऋषीवर के उपदेश से उस गन्धर्व ने उन हड्डियों को सरस्वती नदी में प्रवाहित किया, तब उसका विमान फिर उड़ने लगा। सो हे राजन्! ऐसा नारायण कवच हमने तुम्हें सुनाया। जो इस कवच को पढ़ा करे उसके सामने युद्ध में कोई नहीं ठहर सकता।

卐 श्रीरामाय नमः 卐

श्रीरामरक्षास्तोत्र

'रामरक्षाकवच' की सिद्धि की विधि

नवरात्र में प्रतिदिन नौ दिनों तक ब्रह्म-मुहूर्त में नित्य-कर्म तथा स्नानादि से निवृत्त हो शुद्ध वस्त्र धारण कर कुशा के आसन पर सुखासन लगाकर बैठ जाइए। भगवान श्रीराम के कल्याणकारी स्वरूप में चित्त को एकाग्र करके इस महान फलदायी स्तोत्र का कम से कम ग्यारह बार और यदि यह न हो सके तो सात बार नियमित रूप से प्रतिदिन पाठ कीजिये। पाठ करने वाले की श्रीराम की शक्तियों के प्रति जितनी अखण्ड श्रद्धा होगी, उतना ही फल प्राप्त होगा। वैसे 'रामरक्षाकवच' कुछ लम्बा है, परन्तु इस संक्षिप्त रूप से भी काम चल सकता है। पूर्ण शान्ति और विश्वास से इसका जाप होना चाहिये, यहाँ तक कि वह कण्ठस्थ हो जावे।

विनियोगः

इस रामरक्षास्तोत्र-मन्त्र के बुधकौशिक ऋषि हैं, सीता और रामचन्द्र देवता हैं, अनुष्टुप् छन्द है, सीता शक्ति हैं, श्रीमान् हनुमान् जी कीलक हैं तथा श्रीरामचन्द्रजी की प्रसन्नता के लिये रामरक्षास्तोत्र के जप में विनियोग किया जाता है।

ध्यानम्

जो धनुष-बाण धारण किये हुए हैं, बद्ध पद्मासन से विराजमान हैं, पीताम्बर पहने हुए हैं, जिनके प्रसन्न नयन नूतन कमलदल से स्पर्धा करते तथा वामभाग में विराजमान श्रीसीताजी के मुखकमल से मिले हुए हैं, उन आजानुबाहु, मेघश्याम, नाना प्रकार के अंलकारों से विभूषित तथा विशाल जटाजूटधारी श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान करें।

स्तोत्रम्

श्रीरघुनाथ जी का चरित्र सौ करोड. विस्तारवाला है और उसका एक-एक अक्षर भी मनुष्यों के महान् पापों को नष्ट करने वाला है।।१।।

जो नीलकमल के समान श्यामवर्ण, कमल-नयन, जटाओं पर मुकुट से सुशोभित, हाथों में खड्ग, तूणीर, धनुष और बाण धारण करने वाले, राक्षसों के संहारकारी तथा संसार की रक्षा के लिए अपनी लीला से ही अवतीर्ण हुए हैं, उन जन्मा और सर्वव्यापक भगवान राम का जानकी और लक्ष्मणजी के सहित स्मरण कर प्राज्ञ पुरुष इस सर्वकामप्रदा और पापविनाशिनी रामरक्षा का पाठ करें। मेरे सिरे की राघव और ललाट की दशरथात्मज रक्षा करें।।२-४।।

कौसल्यानन्दन नैत्रों की रक्षा करें, विश्वामित्रप्रिय कानों को सुरक्षित रखें तथा यज्ञरक्षक घ्राण की और सौमित्रिवत्सल मुख की रक्षा करें।।५।।

मेरी जिव्हा की विद्यानिधि, कण्ठ की भरतवन्दित, कन्धों की दिव्यायुध और भुजाओं की भग्नेशकार्मुक (महादेवजी का धनुष तोड़ने वाले) रक्षा करें।।६।।

हाथों की सीतापति, हृदय की जामदग्न्यजित् (परशुरामजी को जीतने वाले), मध्य भाग की खरध्वंसी (खर नाम के राक्षस का नाश करने वाले) और नाभि की जाम्बवदाश्रय (जाम्बवान् के आश्रय स्वरूप) रक्षा करें।।७।।

कमर की सुग्रीवेश (सुग्रीव के स्वामी), सक्थियों की हनुमत्प्रभु और ऊरूओं की राक्षसकुल-विनाशक रघुश्रेष्ठ रक्षा करें।।८।।

जानुओं की सेतुकृत्, जङ्घाओं की दशमुखान्तक (रावण को मारने वाले), चरणों की विभीषणश्रीद (विभीषण को ऐश्वर्य प्रदान करने वाले) और सम्पूर्ण शरीर की श्रीराम रक्षा करें।।९।।

जो पुण्यवान् पुरुष रामबल से सम्पन्न इस रक्षा का पाठ करता है, वह दीर्घायु, सुखी, पुत्रवान्, विजयी और विनयसम्पन्न हो जाता है।।१०।।

जो जीव पाताल, पृथ्वी अथवा आकाश में विचरते हैं और जो छद्मवेश में घूमते रहते हैं, वे रामनामों से सुरक्षित पुरुष को भी नहीं कसते।।११।।

'राम', रामभद्र', 'रामचन्द्र' - इन नामों का स्मरण करने से मनुष्य पापों से लिप्त नहीं होता तथा भोग और मोक्ष प्राप्त कर लेता है।।१२।।

जो पुरुष जगत् को विजय करने वाले एकमात्र मन्त्र रामनाम से सुरक्षित

इस स्तोत्र को कण्ठ में धारण करता है (अर्थात् इसे कठण्स्थ कर लेता है), सम्पूर्ण सिद्धियाँ उसके हस्तगत हो जाती हैं।।१३।।

जो मनुष्य वज्रपञ्जर नामक इस रामकवच का स्मरण करता है, उसकी आज्ञा का कहीं उल्लङ्घन नहीं होता और उसे सर्वत्र जय और मङ्गल की प्राप्ति होती है।।१४।।

श्रीशंकर ने रात्रि के समय स्वप्न में इस रामरक्षा का जिस प्रकार आदेश दिया था, इसी प्रकार प्रातःकाल जागने पर बुधकौशिक ने इसे लिख दिया।।१५।।

जो मानो कल्पवृक्षों के बगीचे हैं तथा समस्त आपत्तियों का अन्त करने वाले हैं, जो तीनों लोकों में परम सुन्दर हैं, वे श्रीमान् राम हमारे प्रभु हैं।।१६।।

जो तरूण अवस्था वाले, रूपवान, सुकुमार, महाबली, कमल के समान विशाल नेत्रों वाले, चीरवस्त्र और कृष्णमृगचर्मधारी, फल-मूल आहार करने वाले, संयमी, तपस्वी, ब्रह्मचारी, सम्पूर्ण जीवों के शरण देने वाले, समस्त धनुर्धारियों में श्रेष्ठ और राक्षस कुल का विनाश करने वाले हैं, वे रघुश्रेष्ठ दशरथकुमार राम और लक्ष्मण दोनों भाई हमारी रक्षा करें।।१७-१९।।

जिन्होंने संधान किया हुआ धनुष ले रखा है, जो बाण का स्पर्श कर रहे हैं तथा अक्षय बाणों से युक्त तूणीर लिये हुए हैं, वे राम और लक्ष्मण मेरी रक्षा करने के लिए मार्ग में सदा ही मेरे आगे चलें।।२०।।

सर्वदा उद्यत, कवचधारी, हाथ में खड्ग लिये, धनुष-बाण धारण किये तथा युवा अवस्थावाले भगवान् राम लक्ष्मणजी सहित आगे-आगे चलकर हमारे मनोरथों की रक्षा करें।।२१।।

(भगवान् का कथन है कि) राम, दाशरथि, शूर, लक्ष्मणानुचर, बली, काकुत्स्थ, पुरुष पूर्ण, कौसल्येय, रघूत्तम्, वेदान्तवेद्य, यज्ञेश, पुराणपुरुषोत्तम, जानकीवल्लभ, श्रीमान् और अप्रमेयपराक्रम-इन नाम को नित्यप्रति श्रद्धापूर्वक जप करने से मेरा भक्त अश्वमेध यज्ञ से भी अधिक फल प्राप्त करता है- इसमें कोई सन्देह नहीं है।।२२-२४।।

जो लोग दूर्वादल के समान श्यामवर्ण, कमलनयन पीताम्बरधारी भगवान् राम का इन दिव्य नामों से स्तवन करते हैं, वे संसार चक्र में नहीं पड़ते।।२५।।

लक्ष्मणजी के पूर्वज, रघुकुल में श्रेष्ठ, सीताजी के स्वामी, अतिसुन्दर, ककुत्स्थकुलनन्दन, करुणासागर, गुणनिधान, ब्राह्मणभक्त, परम धार्मिक, राजराजेश्वर, सत्यनिष्ठ, दशरथपुत्र श्याम और शान्तमूर्ति, सम्पूर्ण लोकों में सुन्दर, रघुकुलतिलक, राघव और रावणारि भगवान् राम की मैं वन्दना करता हूँ।।२६।।

राम, रामभद्र, रामचन्द्र, विधातृस्वरूप, रघुनाथ, प्रभु सीतापति को नमस्कार हैं।।२७।।

हे रघुनन्दन श्रीराम! हे भरताग्रज भगवान् राम! हे रणधीर प्रभु राम! आप मेरे आश्रय होइये।।२८।।

मैं श्रीरामचन्द्रजी के चरणों का मन से स्मरण करता हूँ, श्रीरामचन्द्र के चरणों का वाणी से कीर्तन करता हूँ, श्रीरामचन्द्र के चरणों को सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ तथा श्रीरामचन्द्र के चरणों की शरण लेता हूँ।।२९।।

राम मेरी माता हैं, राम मेरे पिता हैं, राम स्वामी हैं और राम ही मेरे सखा है। दयामय रामचन्द्र ही मेरे सर्वस्व हैं, उनके सिवा और किसी को मैं नहीं जानता–बिल्कुल नहीं जानता।।३०।।

जिनकी दायीं ओर लक्ष्मणजी, बायीं ओर जानकीजी और सामने हनुमान्जी विराजमान हैं, उन रघुनाथजी की मैं वन्दना करता हूँ।।३१।।

जो सम्पूर्ण लोकों में सुन्दर, रणक्रीड़ा में धीर, कमलनयन, रघुवंशनायक, करुणामूर्ति और करूणा के भण्डार हैं, उन श्रीरामचन्द्रजी की मैं शरण लेता हूँ।।३२।।

जिनकी मन के समान गति और वायु के समान वेग है, जो परम जितेन्द्रय और बुद्धिमानों में श्रेष्ठ हैं, उन पवननन्दन वानराग्रगण्य श्रीरामदूत की मैं शरण लेता हूँ।।३३।।

कवितामयी डाली पर बैठकर मधुर अक्षरों वाले राम-राम इस मधुर नाम को कूजते हुए बाल्मिकिरूप कोकिल की मैं वन्दना करता हूँ।।३४।।

आपत्तियों को हरने वाले तथा सब प्रकार की सम्पत्ति प्रदान करने वाले लोकाभिराम भगवान् राम को मैं बारम्बार नमस्कार करता हूँ।।३५।।

'राम-राम' ऐसा घोष करना सम्पूर्ण संसार बीजों को भून डालने वाला, समस्त सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति कराने वाला तथा यमदूतों को भयभीत करने वाला है।।३६।।

राजाओं में श्रेष्ठ श्रीरामजी सदा विजय को प्राप्त होते हैं। मैं लक्ष्मीपति भगवान् राम का भजन करता हूँ। जिन रामचन्द्रजी ने सम्पूर्ण राक्षस सेना का ध्वंस कर दिया था, मैं उनको प्रणाम करता हूँ। राम से बड़ा और कोई आश्रय नहीं है। मैं उन रामचन्द्रजी का दास हूँ। मेरा चित्त सदा राम में ही लीन रहे, हे राम! आप मेरा उद्धार कीजिये।।३७।।

(श्रीमहादेवजी पार्वतीजी से कहते हैं-) हे सुमुखि! रामनाम विष्णुसहस्रनाम के तुल्य है। मैं सर्वदा 'राम, राम, राम' इस प्रकार मनोरम रामनाम में ही रमण करता हूँ।।३८।।

इति श्रीबुधकौशिकमुनिविरचितं श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम्

भगवान श्रीराम-स्तुति

श्रीराम चन्द्र, कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारुणं।।
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुंदरं।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं।।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं।
रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं।।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं।।
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनं।।
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरू सहज सुंदर साँवरो।
करुण निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
ऐहि भांति गौरि असीम सुनि सिय सहित हियं हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली।।
सो0- जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।।

सियावर रामचन्द्र की जय! पवनसुत हनुमान की जय!!
बोलो भाई सब सन्तन की जय!!!

श्री कृष्ण अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्

श्री कृष्णः कमलनाथो वासुदेवः सनातनः।
वसुदेवात्मजः पुण्यो लीलामानुषविग्रहः।।1।।

श्रीवत्सकोस्तुभधरो यशोदावत्सलो हरिः।
चतुर्भुजातः चक्रासिगदाशङ्खद्यादु युधः।।2।।

देवकीनन्दनः श्रीशो नन्दगोपप्रियात्मजः।
यमुनावेगसंहारी बलभद्राप्रियानुज।।3।।

पूतनाजीवितहरः शकटासुरभञ्जनः।
नन्दव्रजजनानन्दी सच्चिदानन्दविग्रहः।।4।।

नवनीतविलिप्ताङ्गो नवनीतनटोऽनघः।
नवनीतनवाहारो मुचुकुन्दप्रसादकः।।5।।

षोडशस्त्रेसहत्रीष्वस्त्रि भङ्गीमधुराकृतिः।
शुकबागमृताब्धीन्दुर्गेविन्दो योगिनां पतिः।।6।।

वत्सवाटचरोऽनन्तो धेनुकासुरभञ्जनः।
तृणीकृत तृणावर्तो यमलार्जुनभञ्जनः।।7।।

उत्तालतालभेत्ता च तमालश्यामलाकृतिः।
गोपगोपीश्वरो योगी कोटिसूर्यसमप्रभः।।8।।

इलापतिः परंज्योतिर्यादवेन्द्रा यदूद्वहाः।
वनमाली पीतवासाः पारिजातापहारकः।।9।।

गोवर्धनाचलोद्धर्ता गोपाल सर्वपालकः।
अजो निरञ्जन कञ्जलोचनः।।10।।

मधुहा मधुरानाथो द्वारकानायको बली।
वृन्दावनान्तसञ्चारी तुलसीदामभूषणः।।11।।

स्यमन्तकमणेर्हर्ता नरनारायणात्मकः।
कुब्जा कृष्णाम्बरधरो मायी परमपुरुषः।।12।।

मुष्टिकासुर चाणर मल्ल युद्ध विशारदाः।
संसार वैरी कंसारि मुरारिकान्तक ।।13।।

अनादि ब्रह्मचारी च कृष्णव्यसनकर्षकः।
शिशुपालशिरश्छेत्ता दुर्योधनकुलान्तकः।।14।।

विदुराक्रूरवरदो विश्वरूपदर्शकः।
सत्यवाक्सत्यसंकल्पः सत्यभामारतो जयी।।15।।

सुभद्रापूर्वजो विष्णुर्भीष्ममुक्तिप्रदायकः।
जगद् गुरू जगन्नथा वेणुनादविशारदः।।16।।

वृषभासुरविध्वंसी बाणासुरकरान्तकः।
युधिष्ठिरप्रतिष्ठाता बर्हि बर्हावतंसकः।।17।।

पार्थसारथिरव्यक्तो गीतामृतमहोदधिः।
कालीयफणिमणीक्य रञ्जित श्री पदाम्बुजाः।।18।।

दामोदरो यज्ञाभोक्ता दानवेन्द्रविनाशकः।
नारायण परम ब्रह्म पन्नगाशनवाहनः।।19।।

जलक्रीडासमासक्तो गोपीवस्त्रापहारकः।
पुण्यश्लोकस्तीर्थपादो वेदवेद्यो दयानिधिः।।20।।

सर्वतीर्थात्मकः सर्व ग्रहरूपी परात्परः।
एवं श्री कृष्णदेवस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।।21।।

कृष्णनामामृतं नाम परमानन्द कारकम्।
अत्युपद्रवदोषघ्नं परमापुष्यवर्धनम्।।22।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरेहरे।।

श्री गोविंद दामोदर स्त्रोतम्

करारविन्देन पदारविन्दं मुखरविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।
श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविन्द दामोदर माधवेति।।
विक्रेतु कामाखिलगोपकन्या मुरारिपादार्पितचित्तवृत्तिः।
दध्यादिकं मोहव्रशादवोचद् गोविन्द दामोदर माधवेति।।
गृहे गृहे गोपधूकदम्बाः सर्वे मिलित्वा समवाप्ययोगम्।
पुण्यानि नामानि पठन्ति नित्यं गोविन्द दामोदर माधवेति।।
सुखं शयाना निलये निजेऽपि नामानि विष्णोः प्रवदन्ति मर्त्याः।
ते निश्चितं तन्मयतां व्रजन्ति गोविन्द दामोदर माधवेति।।
जिह्वे सदैव भज सुन्दराणि नामानि कृष्णस्य मनोहराणि।
समस्तभक्तार्तिविनाशनानि गोविन्द दामोदर माधवेति।।
सुखावसाने इदमेव सारं दुःखावसाने इदमेव ज्ञेयम्।
देहावसाने इदमेव जाप्यं गोविन्द दामोदर माधवेति।।
जिह्वे रसज्ञे मधुरप्रिया त्वं सत्यं हितं त्वां परमं वदामि।
आवर्तय त्वन्मधुराक्षराणि गोविन्द दामोदर माधवेति।।
त्वामेव याचे मम देहि जिह्वे समागतं दशाधरे कृतान्तो।
वक्तव्यमेव मधुरं सुभक्त्या गोविन्द दामोदर माधवेति।।
श्रीकृष्ण राधावर-गोकुलेश गोपाल गोवर्धन नाथ विष्णो।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविन्द दामोदर माधवेति।।

卐 श्रीगणेशाय मन्त्र 卐

ॐ गं गणपतये नमः !

श्री गणेश जी की आरती

जय-गणेश, जय-गणेश, जय-गणेश देवा।

माता जाकी पार्वती, पिता महादेव।। **जय-गणेश...**

एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी।

माथे सिन्दूर सोहै, मूसे की सवारी।। **जय-गणेश...**

अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया।

बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।। **जय-गणेश...**

पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा।

लड्डुअन कौ भोग लगे, सन्त करें सेवा।। **जय-गणेश...**

❁ बोलो श्रीगणेश जी महाराज की जय ❁

।। श्री अम्बा जी की आरती।।

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ।। टेक
माँग सिंदूर विराजत, टीको मृगमदको ।
उज्जवल से दोउ नैना, चंद्रवदन नीको ।।1।।
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै ।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ।।2।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी ।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुखहारी ।।3।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योति ।।4।।
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती ।
धूम्र विलोचन नैना निशिदिन मदमाती ।।5।।
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे ।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ।।6।।
ब्रह्माणी, रूद्राणी तुम कमलारानी ।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ।।7।।
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ ।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ।।8।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। ।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पति करता ।।9।।
भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी ।
मनवांच्छित फल पावत, सेवत नर नारी ।।10।।
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती ।
(श्री) मालकेतु में राजत कोटिरतन ज्योति ।।11।।
(श्री अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावै ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावै ।।12।।

अथ देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं

न मंत्रं नो यंत्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो,
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं,
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणं।।1।।
विधेरज्ञानेन द्रविण - विरहेणालसतया,
विधेयाश्क्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।2।।
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः,
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।3।।
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता,
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।4।।
परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया,
मया पंचाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता,
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणं।।5।।
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा,
निरातंको रंको विहरति चिरं कोटिकनकैः।

तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं,
जनः को जानीते जननि जननीयं जपविधौ।।6।।
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो,
जटाधारी कंठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं,
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदं ।।7।।
न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववांछापि च न मे,
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै,
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः।।8।।
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः,
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे,
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव।।9।।
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं, करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतत्छठत्वं मम भावयेथाः, क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति।।10।।
जगदम्ब विचित्रमत्र किं, परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परापरं, न हि माता समुपेक्षते सुतं।।11।।
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु।।12।।

।। श्रीदुर्गार्पणमस्तु।।

देवीक्षमापनस्तोत्रम्

श्री गणेशाय नमः।

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।१।।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि।।२।।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।३।।

अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः।।४।।

सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु।।५।।

अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।६।।

कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि।।७।।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि।।८।।

।। इति देवीक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

श्रीदुर्गा जी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ।। ॐ जय ।।
माँग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को ।
उज्जवल से दोऊ नैना, चन्द्र बदन नीको ।। ॐ जय ।।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे ।
रक्त पुष्प गलमाला, कंठन पर साजै ।। ॐ जय ।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्परधारी ।
सुर-नर-मुनिजन सेवत, तिनके दुःख हारी ।। ॐ जय ।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति ।। ॐ जय ।।
शुम्भ-निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती ।। ॐ जय ।।
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोभित बीज हरे ।
मधु-कैटव दोऊ मारे, सुर भय हीन करे ।। ॐ जय ।।
ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ।। ॐ जय ।।
चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरू ।
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू ।। ॐ जय ।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति करता ।। ॐ जय ।।
भुजा चार अति शोभित, खड्ग खप्परधारी ।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी ।। ॐ जय ।।
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
(श्री) मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति ।। ॐ जय ।।
(श्री) अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पत्ति पावै ।। ॐ जय ।।

श्रीजगदीश्वर भगवान् की आरती

ओ३म जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ।।ॐ।।
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनशे मन का ।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ।।ॐ।।
मातु-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ किसकी ।।ॐ।।
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी ।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ।।ॐ।।
तुम करूणा के सागर तुम पालनकर्ता ।
मैं मूरख तुम ज्ञानी, कृपा करो भर्ता ।।ॐ।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ।।ॐ।।
दीन बंधु दुख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ।।ॐ।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ।।ॐ।।

❁ बोलो श्रीसत्यनारायण भगवान की जय ❁

卐 श्री हनूमते नमः 卐

श्रीहनुमान चालीसा

❁ दोहा ❁

श्री गुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि।।

❁ चौपाई ❁

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहूं लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा।अंजनि पुत्र पवनसुत नामा।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै।।
संकर सुबन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन।।
बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचन्द्र के काज सँवारे।।
लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हां। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डर ना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोइ लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अंत काल रघुबर पुर जाई। जहां जन्म हरि-भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।
संकट कटै मिटे सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

❊ दोहा ❊

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

श्रीसंकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रबि भक्षि लियो जब, तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो।।
देवन आनि करी बिनती तब, छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जगमें, कपि संकटमोचन नाम तिहारो॥१॥
बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब, चाहिय कौन विचार विचारौ।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो।को0-॥१।।
अंगद के संग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु, बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो।।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब, लाय सिया-सुधि प्रान उबारो। को0-३॥
रावन त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो।।
चाहत सीय असोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।को0-४॥
बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो।।
आनि सजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो।को0-५॥
रावन जुद्ध अजान कियो तब, नाग कि फाँस सबै सिर डारो।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो।।
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो।को0-६॥
बंधु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि, देउ सबै मिमि मंत्र बिचारो।।
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत सहारो। ।को0-७॥
काज किये बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसे नहिं जात है टारो।।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो ।को0-८॥

❊ दोहा ❊

लाल देह लाली लसे, अरू धरि लाल लंगूर। बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर।।

श्रीबजरंग-बाण

जय हनुमन्त सन्तहितकारी । सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी।।
जन के कारज विलम न कीजै । आतुर दौरि महासुख दीजै।।
जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा । सुरसा वदन पैठि विस्तारा।।
आगे जाइ लंकिनी रोका । मारेहु लात गई सुरलोका।।
जाय विभीषण को सुख दीन्हा । सीता निरखि परम पद लीन्हा।।
बाग उजारि सिन्धुमहँ बोरा । अति आतुर यमकातर तोरा ।।
अक्षयकुमार को मारि सँहारा । लूम लपेटि लंकको जारा ।।
लाहसमान लंक जरि गई । जयजय ध्वनि सुरपुरमें भई।।
अब विलम्ब केहि कारन स्वामी । कृपा करहु उर अन्तरजामी।।
जब लक्ष्मण प्राण के दाता । आतुर होई दुःख करहु निपाता।।
जय गिरधर जय-जय सुखसागर । सूरसमूहसमरथ भटनागर ।।
ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले। वैरिहि मारु वज्रकी कीले।।
गदा वज्र लै वैरिहि मारो। महाराज प्रभु दास उबारो।।
ॐकार हुंकार महावीर धावो। बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो।।
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीशा । ॐ हुं हुं हु हनु अरिउरसीशा।।
सत्य होहु हरि सत्य पायकै। रामदूत धरू मारू धाइकै।।
जय जय जय हनुमन्त अगाधा। दुख पावत जन केहि अपराधा।।
पूजा जप तप नेम अचारा । नहिं जानत हौं दास तुम्हारा।।
बन उपवन मग गिरि गृहमाहीं । तुमरे बल हम डरपत नाहीं।।
पाय परीं कर जोरि मनावौं । यहि अवसर अब केहि गोहरावौं।।
जय अंजनि कुमार बलबन्ता। शंकरसुवन वीर हनुमन्ता।।
वदन कराल काल कुलघालक । राम सहाय सदा प्रतिपालक।।
भूत प्रेत पिसाच निसाचर। अग्नि बेताल काल मारी मर।।

इन्हें मारु, तोहि शपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की।।
जनकसुता हरिदास कहावो। ताकी शपथ, विलम्ब न लावो।।
जय जय जय धुनि होत अकाशा । सुमिरत होत दुसह दुःखनाशा।
चरण-शरण कर जोरि मनावौं। यहि अवसर अब केहि गोहरावौं।।
उठु, उठु, चलु, तोहि रामदोहाई। पायँ परौं, कर जोरि मनाई।।
औ चम चम चम चम चपल चलंता। औं हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता।।
औं हंहं हाक देत कपित चंचल । औं सं सहन पराने खलदल।।
अपने जन को तुरत उबारौ। सुमिरत होय अनंद हमारो।।
यहि बजरंगबाण जोहि मारे। ताहि कहो फिरि कौन उबारे।।
पाठ करे बजरंगबान की। हनुमत रक्षा करै प्रान की।।
यह बजरंगबान जो जापे। हनुमत रक्षा करै प्रान की।।
धूप देय अरू जपै हमेशा। ताके तन नहिं रहै कलेशा।।

❊ दोहा ❊

प्रेम प्रतीति धरि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान।।
तेहिके कारज सकल शुभ, सिद्ध करें हनुमान।।

श्रीहनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर काँपे। रोग-दोष जाके निकट न झाँपे।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सुहाई।।
हे बीर रघुनाथ पठाये। लंकाजारि सीय सुधि लाये।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजी के काज सँवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्रान उबारे।।
पैठि पताल तोरि जम-कारे। अहिरावन की भुजा उखारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई।।
जो हनुमान (जी) की आरती गावै। बसि बैकुंठ परमपद पावै।।

❊ **बोलो श्रीबजरंगबली की जय** ❊

❊ जानकी बल्लभ सीताराम, जय बजरंगी-जय हनुमान ❊

यों निश्चय कर व्यवसित मति से, मन प्रथम हृदयसे जोड़ लिया।
फिर पूर्वजन्म में अनुशिक्षित, इस परम मन्त्रका जाप किया।।1।।

गजेन्द्र बोला-

मनसे है ॐ नमन प्रभु को, जिससे यह जड़ चेतन बनता।
जो परम पुरुष जो आदि बीज, सर्वोपरि जिसकी ईश्वरता।।2।।
जिसमें, जिससे, जिसके द्वारा जगकी सत्ता, जो स्वयं यही।
जो कारण-कार्य-परे सबके, जो निजभू, आज शरण्य वही।।3।।
अपने में ही अपनी माया से ही रचे हुए संसार।
को हो कभी प्रकट, अन्तर्हित, कभी देखता उभय प्रकार।।
जो अविद्धदृक्, साक्षी बनकर, जो परसे भी सदा परे।
है जो स्वयं प्रकाशक अपना, मेरी रक्षा आज करे।।4।।
लोक, लोकपालों का, इन सबके कारण का भी संहार।
कर देता सम्पूर्ण रूप से महाकाल का कठिन संहार।
कर देता सम्पूर्ण रूप से महाकाल का कठिन कुठार।।
अन्धकार तब छा जाता है, एक गहन, गंभीर अपार।
उसके पार चमकते जो विभु, वे लें मुझको आज सँभार।।5।।
देवता तथा ऋषि लोग नहीं जिनके स्वरूपको जान सके।
फिर कौन दूसरा जीव भला, जो उनको कभी बखान सके।।
जो करते नाना रूप धरे, लीला अनेक नटतुल्य रचा।
है दुर्गम जिनका चरित-सिंधु, वे महापुरुष लें मुझे बचा।।6।।
जो साधुस्वभावी, सर्वसुहृद् वे मुनिगण भी सब सङ्ग छोड़।
बस केवलमात्र आत्मा का सब भूतों से सम्बन्ध जोड़।।
जिनके मङ्गलमय पद-दर्शन की इच्छा से वन में पालन।

करते अलोक व्रत का अखण्ड, वे ही हैं मेरे अवलम्बन।।7।।
जिसका होता है जन्म नहीं, केवल भ्रम से होता प्रतीत।
जो कर्म और गुण-दोष तथा जो नामरूप से है अतीत।।
रचनी होती तब सृष्टि किन्तु, जब करना होता उसका लय।
तब अङ्गीकृत कर लेता है इन धर्मों को वह यथासमय।।8।।
उस परमेश्वर, उस परमब्रह्म, उस अमित-शक्ति को नमस्कार।
जो अद्भुतकर्मा, जो अरूप, फिर भी लेता बहुरूप धार।।9।।
परमात्मा जो सबका साक्षी, उस आत्मदीप को नमस्कार।
जिस तक जाने में पथ न ही, जो वाणी-मन-चित्त हार।।10।।
बन सतोगुणी सुनिवृत्तिमार्ग से पाते जिसको विद्वज्जन।
जो सुखस्वरूप निर्वाणजनित, जो मोक्षधामपति, उसे नमन।।11।।
जो शान्त, घोर, जडरूप प्रकट होते तीनों गुण धर्म धार।
उन सौम्य, ज्ञानधन, निर्विशेषको नमस्कार है, नमस्कार।।12।।
सबके स्वामी, सबके साक्षी क्षेत्रज्ञ! तुझे है नमस्कार।
हे आत्ममूल, हे मूलप्रकृति, हे पुरुष नमस्ते बारम्बार।।13।।
इन्द्रिय-विषयों का जो द्रष्टा, इन्द्रियानुभवका जो कारन।
जो व्यक्त असत् की छाया में, हे सदाभास! है तुझे नमन।।14।।
सबके कारण, निष्कारण भी, हे विकृतिरहित सबके कारण।
तेरे चरणों में, बार-बार है नमस्कार मेरा अर्पण।
सब श्रुतियों, शास्त्रों का सार, जो केवल एक अगाध निलय।
उस मोक्षरूप को नमस्कार, जिसमें पाते सज्जन आश्रय।।15।।
जो ज्ञानरूप से छिपा गुणों के बीच, काष्ठ में यथा अनल।
अभिव्यक्ति चाहता मन जिसका, जिस समय गुणों में हो हलचल।।
मैं नमस्कार करता उसको, जो स्वयं प्रकाशित है उनमें।

आत्मालोचन करके न रहे, जो विधि-निषेध के बन्धन में।।16।।
जो मेरे-जैसे शरणागत जीवों का हरता है बन्धान।
उस मुक्त, अमित करुणावाले, आलस्यरहित के लिये नमन।।
सब जीवों के मन के भीतर, जो है प्रतीत प्रत्यक्चेतन।
बस अन्तर्यामी, हे भगवन्! हे अपरिछिन्न! है तुझे नम।।17।।
जिसका मिलना है सहज नहीं, उन लोगों को, जो सदा रमें।
लोगों में, धन में, मित्रों में, अपने में, पुत्रों में, घर में।।
जो निर्गुण, जिसका हृदय-बीच जन अनासक्त करते चिन्तन।
हे ज्ञानरूप! हे परमेश्वर! हे भगवन् मेरा तुझे नमन।।18।।
जिनको विमोक्ष-धर्मार्थ काम की इच्छावाले जन भजकर।
वाञ्छित फल को पा लेते हैं, जो देते तथा अयाचित वर।।
भी अपने भजनेवालों को, कर देते उनकी देत अमर।
लें वे ही आज उबार मुझे, इस संकट से करुणासागर।।19।।
जिनके अनन्य जन धर्म, अर्थ या काम-मोक्ष, पुरुषार्थ-सकल।
की चाह नहीं रचाते मन में, जिनकी बस, इतनी रुचि केवल।।
अत्यन्त विलक्षण श्रीहरि के जो चरित परम् मङ्गल सुन्दर।
आनन्द-सिन्धु में मग्न रहें रहें, गा-गाकर उनको निसि-वासर।।20।।
जो अविनाशी, जो सर्वव्याप्त, सबका स्वामी, सबका ऊपर।
अव्यक्त, किंतु आध्यात्ममार्ग के पथिकों को जो है गोचर।।
इन्द्रियातीत, अति दूर-सदृश जो सूक्ष्म तथा जो अपार।
कर-कर बखान में आज रहा, उस आदि पुरुष को ही पुकार।।21।।
उत्पन्न वेद, ब्रह्मादि देव, ये लोक सकल, चर और अचर।
होते जिसकी बस, स्वल्प कला से नाना नाम-रूप धरकर।।22।।
ज्यों ज्वलित अग्नि से चिनगारी, ज्यों रवि से किरणें निकल-निकल।

फिर लौट उन्हीं में जाती हैं, गुणकृत प्रपञ्च उस भाँति सकल।।
मन, बुद्धि, सभी इन्द्रियों तथा सब विविध योनियों वाले तन।
का जिससे प्रकटन हो जिसमें, हो जाता है पुनरावर्तन।।23।।
वह नहीं देव, वह असुर नहीं, वह नहीं मर्त्य, वह क्लीब नहीं।।
वह कारण अथवा कार्य नहीं, गुण कर्म, पुरुष या जीव नहीं।
सबका कर देने पर निषेध जो कुछ रह जाता शेष, वही।
जो है अशेष हो प्रकट आज, हर ले मेरा सब क्लेश वही।।24।।
कुछ चाह न जीवित रहने की, जो तमसावृत बाहर-भीतर-ऐसे
इस हाथी के तन को, क्या भला, करूँगा मैं रखकर?
इच्छा इतनी-बन्धन जिसका सुदृढ़ न काल से भी टूटे।
आत्मा की जिससे ज्योति ढँकी, अज्ञान वही मेरा छूटे।।25।।
उस विश्वसृजक, अज विश्वरूप, जगसे बाहर जग-सूत्राधार।
विश्वात्मा, ब्रह्म, परमपद को, इस मोक्षार्थी का नमस्कार।।26।।
निज कर्म-जाल को भक्तियोग से जला, योग परिशुद्ध हृदय।
में जिसे देखते योगीजन, योगेश्वर प्रति मैं नत सविनय।।27।।
हो सकता सहन नहीं जिसकी त्रिगुणात्म-शक्ति का वेग प्रबल।
जो होता तथा प्रतीत धरे इन्द्रिय-विषयों का रूप सकल।।
जो दुर्गम उन्हें मलिन विषयों में जो कि इन्द्रियों के उलझे।
शरणागत-पालक, अमित-शक्ति हे! बारंबार प्रणाम तुझे।।28।।
अनभिज्ञ जीव जिसकी माया, कृत अहंकार द्वारा उपहत।
निज आत्मा से मैं उस तुरन्त महिमामय प्रभु के शरणागत।।29।।

गजेन्द्रस्तोत्र का पाठ करने से मनुष्य मृत्यु के हातों से छुटता है और उसे भगवान के दर्शन होते हैं, तथा सारे दुःखों की निवृति होती है। एवं उसे ग्राह तथा हाथी की तरह मोक्ष प्राप्त होता है।।।30।।

श्रीशुकदेवजी ने कहा-

यह निराकर-वपु भेदरहित की स्तुति गजेन्द्र वर्णित सुनकर।
आकृति-विशेषवाले रुपों के अभिमानी ब्रह्मादि अमर।।
आये जब उसके पास नहीं; तब श्रीहरि जो आत्मा घट-घट।
के होने से सब देवरूप, हो गये वहाँ उस काल प्रकट।।30।।
वे देख उसे इस भाँति दुःखी, उसका यह आर्त्तस्तव सुनकर।
मन-सी गतिवाले पक्षिराज की चढ़े पीठ ऊपर सत्वर
आ पहुँचे, था गजराज जहाँ, निज करमें चक्र उठाये थे।
जब जगनिवास के साथ-साथ, सुर भी स्तुति करते आये थे।।31।।
अतिशय बलशाली ग्राह जिसे, था पकड़े हुए सरोवर में।
गजराज देखकर श्रीहरि को, आसीन गरुड़पर अम्बर में।।
खर चक्र हाथ में लिये हुए, वह दुखिया उठा कमल करमें।
'हे विश्व-वन्द्य प्रभु! नमस्कार' यह बोल उठा पीड़ित स्वर में।।32।।
पीड़ा में उसको पड़ा देख, भगवान् अजन्मा पड़े उतर।
अविलम्ब गरुड़ से फिर कृपया झट खींच सरोवर से बाहर।।
कर गजको मकर-सहित, उसका मुख चक्रधार से चीर दिया।
देखते-देखते सुरगणके हरि ने गजेन्द्र को छुड़ा लिया।।33।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानि सहितं नमामि।।

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे।
सुरतरूवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं।
तदपि तव गुणानामीशपारं न याति।।

करचरण कृतं वा कायजं कर्मजं वा
श्रवण नयनज्ञं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व।
जय जय करूणाब्धे श्री महादेव शम्भो।।

देवी प्रप्पन्नार्ति हरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरी पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवी चराचरस्य।।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वाताभ्रजं वानरि यूथ मुख्यं श्री राम दूतं शरण प्रपद्ये।।

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासयकचारूचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।

वंशीविभूषितकरा नवनीरदाभात्।
पीताम्बरादरुण बिम्ब फलाधरोष्ठात्।।

पूर्णेन्दुसुन्दरमुखादरविन्दनेत्रात्
कृष्णात् परं किमपि तत्त्वमहं न जाने।

सशंखचक्रं सकिरीटकुण्डलम्।
संपीतवस्त्रं सरसीरहेक्षणम्।
सहारवक्षस्थलकौस्तुभंप्रियं।
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्।।

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्ति प्रचोदयात्।

ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्याकुमारि च धीमहि।
तन्नो दुर्गे प्रचोदयात्।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्नि च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मि प्रचोदयात्।

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

ॐ आञ्जनेयाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि
तन्नो हनुमत् प्रचोदयात्।

ॐ दाशरथाय विद्महे जानकीवल्लभाय धीमहि।
तन्नो रामः प्रचोदयात्।

सेवान्तिकाबकुलचम्पकपाटलाब्जैः पुन्नागजातिकरवीररसाल पुष्पैः,
बिल्वप्रवालतुलसीदलमञ्जरीभिः त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद।।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
तेहनाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याःसन्ति देवाः।।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्प्यात्।
सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।
।।मंत्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।।

आरती श्रीगंगा मैया जी की

ओ३म् जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता।। ओ३म्.....
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता।। ओ३म्.....
पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता।
तेरी कृपा दृष्टि हे मैया, त्रिभुवन सुख दाता।। ओ३म्.....
एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परम मोक्ष पाता।। ओ३म्.....
आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, भक्ति-मुक्ति पाता।। ओ३म्.....

श्री गंगा मैया का श्लोक

पापापहारि दुरितारितरंगधारि।
शैलप्रचारि गिरिराज गुफाविदारि ।।
झंकारकारि हरिपादरजोऽपहारि।
गांगं पुनातु सततं शुभकारि वारि ।।
गांगवारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम्।
त्रिपुरारिशिरशवारि पापहारि पुनातु माम् ।।